गांधी जयंती पर जीएनएलयू में खुला दिव्यांगता अध्ययन केन्द्र

दिव्यांग लोगों के अधिकार, सामाजिक न्याय के लिए शिक्षा, शोध एवं नीति पर होगा काम

अहमदाबाद. महात्मा गांधी की 150वीं जयंती वर्ष पर गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी (जीएनएलयू) ने दिव्यांगता अध्ययन उत्कृष्टता केन्द्र (सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर डिसेबिलिटी स्टडीज) शुरू किया है। यह केन्द्र दिव्यांग लोगों के अधिकार, उन्हें समाज में उचित स्थान दिलाने के लिए शिक्षा, शोध एवं नीतियों को बनाने में मददरूप होने का काम करेगा।

जीएनएलयू के निदेशक डॉ.शांता कुमार ने बताया कि यूं तो जीएनएलयू में वर्ष 2017 से दिव्यांगता पर काम के लिए समिति कार्यरत है जो बेहतर कार्य कर रही है, लेकिन अब इस दिशा में और भी ज्यादा कामकाज के हिसाब से दिव्यांगता अध्ययन उत्कृष्टता केन्द्र शुरू किया है। यह केन्द्र पाठ्यक्रमों में उचित परिवर्तन, शोध कार्य के जरिए दिव्यांगों के मानव अधिकार, समाज में दिव्यांग लोगों को उचित स्थान दिलाने, सभी जगहों पर आसानी से आने जाने में दिव्यांगों को सुविधा मिले, समावेशी शिक्षा के लिए कार्य करेगा।

इस केन्द्र के शुभारंभ के दौरान नेशनल अकादमी ऑफ लीगल स्टडीज (नलसर) हैदराबाद की अकादमिक डीन एवं दिव्यांग लोगों के अधिकार के लिए काम करने वाली प्रोफेसर अमिता ढांडा उपस्थित रहीं। उन्होंने कहा कि हमें सभी को समान अधिकार देने के लिए अपने घर से शुरुआत करनी होगी। इस सेंटर के शुरू होने के साथ ही जीएनएलयू में कार्यरत कुल उत्कृष्टता केन्द्रों की संख्या बढ़कर 16 हो गई है।

गांधी पर 'राजद्रोह के मुकद्दमे' को नाटक के जरिए दर्शाया

जीएनएलयू में महात्मा गांधी की जयंती के दिन एक नाटक का मंचन किया गया। द ग्रेट ट्रायल नाम से मंचित किए गए नाटक में वर्ष 1922 में महात्मा गांधी पर अहमदाबाद के सर्किट हाऊस के हॉल में चलाए गए राजद्रोह के मुकद्दमे (ट्रायल) की प्रक्रिया को प्रस्तुति की गई। जिसमें महात्मा गांधी की ओर से दी गई दलीलों और उसके बाद गांधी जी को सुनाई गई छह साल की सजा का वर्णन किया गया, जिसे भी गांधीजी ने सहर्ष स्वीकार किया था।

पत्रिका Fri, 04 October 2019
epaper.patrika.com/c/44329646